11-10-2001

समय प्रमाण अब शान्ति, शक्ति और सुख देवा बनो तब बाप की प्रत्यक्षता होगी

आज बाबा के पास पहुँची तो क्या देखा, बापदादा लाइट की ऊंची पहाड़ी पर खड़े हैं और बापदादा के नयनों से, मस्तक से बहुत प्यारी शान्तिमय लाइट निकल रही थी जो लाइट हाउस के समान चारों ओर फैल रही थी और बाबा इसी कार्य में इतना बिजी थे जो हमारी तरफ भी देख नहीं रहे थे। मैं भी बाबा को देख उसी अनुभव में लीन थी। कुछ समय के बाद बाबा बोले, बच्ची देख रही हो - बापदादा किस कार्य में बिजी हैं। वर्तमान समय तो हर एक बच्चे की भी विशेष यही जिम्मेवारी है - स्व द्वारा विश्व की आत्माओं में शान्ति की लहर फैलायें, आत्माओं को रूहानी साहस का सांस दिलावें। जब आप बच्चों का विश्व परिवर्तन का कार्य है तो अपने ब्राह्मण आक्यूपेशन प्रमाण विश्व कल्याण के कार्य को निभाने का यह समय है। जैसे विनाश का कार्य ज़ोरशोर से चल रहा है तो आप शान्ति दाता बच्चों का कार्य इतना ही ज़ोरशोर से चल रहा है?

बापदादा देख रहे हैं कि देश-विदेश में सेवा के प्रोग्राम्स बहुत अच्छे चल रहे हैं। वह तो समय प्रमाण बापदादा का वरदान है। सेवा की खानें खुलनी ही हैं। बापदादा बच्चों की सेवा देख खुश हैं। अच्छे उमंग-उत्साह, मेहनत से कर रहे हैं। परन्तु सेवा के प्रोग्राम्स और स्व-स्थिति के प्रोग्राम्स का बैलेन्स है?

स्व-परिवर्तन द्वारा ही स्थापना का कार्य सम्पन्न होना है। तो स्व स्थिति द्वारा, बेहद की वृत्ति द्वारा स्थापना के कार्य में तीव्रता ला रहे हैं? बच्चे, स्व-स्थिति में एवररेडी हैं? हर एक बाप समान स्व-स्थिति से सन्तुष्ट हैं? बापदादा अब हर बच्चे की यही रिज़ल्ट देखने चाहते हैं। अब समय प्रमाण सदा शान्ति देवा, शक्ति और सुख देवा बनने का समय है। जब निरन्तर ऐसी स्थिति में रहेंगे तब आप बच्चों द्वारा बाप की प्रत्यक्षता होगी और अनेक आत्मायें बाप के समीपता का अनुभव करेंगी। बापदादा जानते हैं कि यह शुभ आशा बाप के हर बच्चे के दिल में बार-बार याद आती है कि बस मुझे तो बाप समान बनना ही है। परन्तु बच्चों का पुरुषार्थ कुछ समय तीव्र होता, फिर कोई समस्या, सरकमस्टांश वा संगठन के वातावरण कारण तीव्रता कम हो जाती है। लेकिन अब समय है निरन्तर लगन में मगन रहने का। इसके बाद बाबा बोले, अब तो बापदादा हर बच्चे को स्व-कल्याण, विश्व-कल्याण के आसनधारी स्थिति में ही देखने चाहते हैं। हर एक अपने को देख दृढ़ संकल्प करे कि मुझे जल्दी-से-जल्दी बाप समान बनना ही है। इसी वृत्ति से स्व में, सेवा में, आन्तरिक शक्ति में वृद्धि लानी ही है। ऐसे बोलते ऐसे लगा जैसे बापदादा बड़े स्नेह और उम्मीदों भरी दृष्टि से हर एक बच्चे को देख रहे हैं। ऐसे लग रहा था जैसे आज पाण्डवपति अपने पाण्डव सेना को एवररेडी बना रहा है।

उसके बाद बाबा को मीटिंग का समाचार सुनाया। (मधुबन में एक छोटी मीटिंग आगे होने वाले कार्यक्रमों के बारे में रखी गई थी, जिसका समाचार बापदादा को सुनाया) तो बाबा बोले, यह आवश्यक है कि प्रोग्राम्स की रूपरेखा अब शान्ति की ही थीम पर हो। बाकी जो प्रोग्राम चल रहे हैं, वह तो चल ही रहे हैं। धर्म सम्मेलन में भी अगर कोई आने लिए तैयार हैं तो होमली

रूप में और ही अच्छे स्नेही, सहयोगी बन जायेंगे। बाकी अभी तक जो प्रोग्राम फाइनल नहीं किये हैं, वह रहने दो। समय प्रमाण देखते चलो।

मधुबन में तथा चारों ओर विशेष योग भट्ठी का वातावरण हो और वाचा के प्रोग्राम्स कम, शान्ति की अनुभूति, शक्ति वा सुख की अनुभूति के प्रोग्राम्स ज़्यादा चलने चाहिए। इस विधि से प्रोग्राम्स बनाते चलो। सबसे ज्यादा स्व परिवर्तन सो सम्पन्न स्थिति बनाने पर ध्यान विशेष देना है। ऐसे कहते बापदादा ने सब बच्चों को बहुत-बहुत स्नेह सम्पन्न याद-प्यार दी। विदेश के बच्चों को भी खास याद और हिम्मत की मुबारक दी। इसके बाद बाबा को विशेष दोनों दादियों की याद दी। बापदादा बोले, दोनों मेरे मुरब्बी बच्चे हैं। बापदादा ने निमित्त बनाया है तो निमित्त बनने वालों को विशेष निमित्त बनने की मदद भी मिलती है। अब दोनों अपनी तबियत के नॉलेजफुल बन गये हैं। बापदादा दोनों बच्चियों को विशेष हिम्मत पर, दिल के प्यार के गोल्डन पुष्प चढ़ा रहे हैं। ऐसे कहते दोनों को बापदादा ने अपने नयनों में समा लिया। हम तो देख-देख खुश हो रही थी - वाह दादियाँ वाह! अच्छा।